शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण के आधार
(Basis of the formulation of Educational Aims)

शिक्षा के उद्देश्यों का सम्बन्ध सम्पूर्ण समाज के समस्त बालकों से है। अतः इनके निर्माण का कार्य अत्यन्त उत्तरदायित्वपूर्ण है। इस सम्बन्ध में समाज के बालकों तथा शिक्षा के सिद्धान्तों (आदर्शों) को दृष्टि में रखते हुए यथेष्ट विचार विनिमय तथा गूढ़ चिन्तन की आवश्यकता है जिससे शिक्षा के वैज्ञानिक तथा लाभप्रद उद्देश्यों का निर्माण किया जा सके। समाज में जिस प्रकार की शिक्षा व्यवस्था होती है, वह समाज वैसा

Scanned with CamScanner

ही बन जाता है। चूँकि शिक्षा के उद्देश्यों का जीवन के उद्देश्यों से सम्बन्ध होता है, इसीलिए शिक्षा के उद्देश्यों का निर्माण करना भी ठीक ऐसे ही है जैसे जीवन के उद्देश्यों को निर्धारित करना। विभिन्न विद्वानों के उद्देश्यों की प्रकृति में अन्तर है। इनमें से कुछ उद्देश्य तो सनातन, निश्चित तथा अपरिवर्तनशील हैं कुछ लचीले, अनुकूल योग्य एवं परिवर्तनशील। जब तक हम शिक्षा के विभिन्न आधारों का अध्ययन नहीं करेंगे तब तक हमको शिक्षा के उद्देश्यों के विषय में पूरी जानकारी नहीं हो सकेगी। इन आधारों को दो वर्गों में बाँटा जा सकता है।

1) आदर्शवादी आधार (Idealistic Basis),
2) यथार्थवादी आधार (Realistic Basis)

1) आदर्शवादी आधार (Idealistic Basis) –

आदर्शवाद दर्शन के अनुसार अन्तिम सत्ता अध्यात्मिक है। आदर्शवादियों के अनुसार शिक्षा एक आध्यात्मिक प्रक्रिया है जो व्यक्ति को आध्यात्मिक जगत के लिए तैयार करता है। आदर्शवाद सत्य, शिव तथा सुन्दरम् जैसे चिरन्तन मूल्यों को प्रतिपादित करता है। आदर्शवादी सार्वभौमिक मूल्यों और आदर्शों को सर्वोच्च स्थान देते हैं। अतएव आदर्शवादी शिक्षा का मुख्य उद्देश्य सार्वभौमिक मूल्यों एवं आदर्शों की प्राप्ति है। आदर्शवादी चरित्र-निर्माण, नैतिकता, संस्कृति आदि तत्वों को प्रमुखता देते हैं। जो समाज आदर्शवादी है, वहाँ की शिक्षा के निश्चित, सनातन तथा अपरिवर्तनशील सार्वभौमिक उद्देश्य होते हैं।

Scanned with CamScanner

उद्देश्य → शिक्षा → जीवन → जीवन दर्शन

2) यथार्थवादी आधार (Realistic Basis) – इस विचारधारा के अनुसार अन्तिम सत्ता निश्चित तथा अपरिवर्तनशील नहीं है अपितु परिवर्तनशील है। इसमें भौतिकवादी परिस्थितियाँ शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण का आधार प्रस्तुत करती है। ये भौतिकवादी परिस्थितियाँ निम्नलिखित हैं –

i) जीवन दर्शन (Philosophy of Life)

ii) राजनीतिक प्रगति (Political Progress) या विचारधारा (Ideology)

iii) प्रौद्योगिक उन्नति (Technological Advancement)

iv) समान आर्थिक दशायें (Economic Conditions)

v) समाज की संस्कृति एवं परम्पराएँ

i) जीवन दर्शन (Philosophy of Life) :– शिक्षा का तात्पर्य जीवन के लक्ष्य को प्रभावित करना है। इसके लिए वह जीवन दर्शन से प्रभावित होती है। चूँकि उद्देश्य का सम्बन्ध शिक्षा से है, इसलिए शिक्षा के उद्देश्य भी किसी न किसी रूप में जीवन दर्शन से ही प्रभावित होते हैं तथा होते रहेंगे। यही कारण है कि जैसे व्यक्ति का जीवन दर्शन जैसा रहता है वह वैसा ही शिक्षा के उद्देश्य पर बल देता है। भारतवर्ष में आदर्श-वादी जीवन-दर्शन में लोगों का अधिक विश्वास होने से यहाँ की शिक्षा के उद्देश्य आदर्शवाद पर आधारित हैं अर्थात् नैतिकता। यूनान के दार्शनिक प्लेटो ने शान्ति के काल में शिक्षा के उद्देश्यों के बारे में बताया था कि शिक्षा का उद्देश्य दार्शनिक, उत्साही तथा बलवान बलवान संरक्षक तैयार होना चाहिए।

Scanned with CamScanner

ii) राजनीतिक प्रगति (Political Progress) :- शिक्षा सबसे अधिक राजनीतिक विचार धाराओं से प्रभावित होती है। जे. एस. ब्राउन के अनुसार "किसी भी देश की तथा किसी भी युग के शिक्षा शासन-तंत्र की विशेषताओं को व्यक्त करती है।" इसका प्रमाण है कि लोकतांत्रिक, एकतंत्रवादी, फासिस्ट तथा साम्यवादी आदि सभी प्रकार की सरकारों ने शिक्षा के उद्देश्यों का निर्धारण अपने अलग-अलग लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए भिन्न-भिन्न ढंगों से किया है। जिन देशों में जनतंत्र का बोलबाला है वहाँ पर 'उत्तम नागरिक बनाना' ही शिक्षा का मुख्य उद्देश्य होता है। इसके विपरीत एकतंत्रवादी राज्यों में चाहे वे राजतंत्र हो अथवा तानाशाही, शिक्षा का उद्देश्य 'शासकों के प्रति वफादार तथा उनकी आज्ञा का पालन करना' ही होता है।

iii) प्रौद्योगिक उन्नति (Technological Advancement) :-

आज के वैज्ञानिक युग में प्रौद्योगिक उन्नति पर बल दिया जा रहा है। अमेरिका, रूस, जापान तथा इंग्लैंड आदि देशों को प्रौद्योगिक उन्नति की दृष्टि से ही प्रगतिशील देशों की संज्ञा दी जाती है। इन देशों ने अपनी-अपनी प्रौद्योगिक उन्नति के लिए प्रौद्योगिक शिक्षा को शिक्षा का महत्वपूर्ण उद्देश्य माना है। जो देश प्रौद्योगिक दृष्टि से पिछड़े हुए हैं वहाँ भी शिक्षा का उद्देश्य भी विज्ञान तथा प्रौद्योगिकी की शिक्षा देना हो सकता है। यही कारण है कि भारत में भी अब तकनीकी प्रशिक्षण के लिए विभिन्न सुविधाएं दी जा रही हैं।

Scanned with CamScanner

iv) समाज की आर्थिक दशाएं :- समाज की आर्थिक दशाएँ शिक्षा के उद्देश्य - निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। जो राष्ट्र आर्थिक दृष्टि से पिछड़े होते हैं, वहाँ की शिक्षा का उद्देश्य ऐसे नवयुवकों को तैयार करना होता है जो देश की आर्थिक प्रगति में अपना सक्रिय योग दे सकें। B.P.L. Indra Awas, वृद्धा-पेंशन, राशन दूकान, NAREGA विभिन्न प्रशिक्षण, योजना Sarve Sikha Avigan

v) समाज की संस्कृति एवं परम्पराएं :- प्रत्येक समाज की अपनी संस्कृति और परम्पराएँ होती हैं। ये ही संस्कृति तथा परम्पराएँ शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित करती हैं। उदा० - भारतीय समाज आदि काल से ही धर्मप्रधान रहा है, यहाँ चारित्रिक बल एवं नैतिक पर सदैव बल दिया जा रहा है।

vi) स्थान तथा समय (Place and Time) :-

Scanned with CamScanner